Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-4, March-2024
www.researchguru.net

ममता कालिया के दौड़ उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

डॉ. रमेशभाई के. वसावा
असिस्टेंट प्रोफेसर सरकारी विनयन एवं विज्ञान कॉलेज, देडियापाडा, जि. नर्मदा Mo. : 9574320944 Email :rameshkumarvasava@gmail.com

प्रस्तावना :

लेखिका ममता जी का जन्म उत्तर प्रदेश के वृदावन में हुआ था। जब ममता जी पैदा हुई थी तो वर्षो यही सुनने में आया कि वह युद्ध-सृता था। द्वितीय विश्व-युद्ध की छाया से उबरता भारत तरह-तरह की विषमताओं से भरा हुआ था। तब भी महँगाई, बेरोजगारी और दीनता से देश जूझ रहा था। भारत छोड़ो आंदोलन अपने चरम बिन्दु पर था। अंग्रेजों को मुल्क से बाहर खदेड़ने का जजबा-रोष लोगों में घर कर चुका था। भारत पाक विभाजन की गुत्थी दिन-पर-दिन जटिल होती जा रही थी। नौकरी पेशा मध्य वर्ग आंतक और आशंका में जीवनयापन कर रहा था। इसी समय में ममता जी ने सेन्ट जॉन्स कॉलेज से प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेने के बाद ममता जी के पिता मथुरा में चम्पा अग्रवाल कॉलेज में एक सौ बीस रुपए पर लेक्चरर बने थे।

ममता जी का बचपन मथुरा तथा आगरा के बीच में व्यतीत हुआ। लेखिका बचपन से ही बहुत कर्मठ थी। माँ के मेडिकल बिल्स की लिस्ट बनाना, बिजली और फोन का बिल अदा करने जाना, डाकखाने में रजिस्ट्री करना, घर के लिए दूध और तरकारी लाना सब काम उन्हें करने पड़ते थे। इन जिम्मेदारियों से उनके व्यवहार और व्यक्तित्व में शुरू से एक उन्मुक्त स्वयंसेवक का गुण विकसित हो गए थे। साहित्य कर्म तथा साहित्यकार के प्रति पिता का आदर-भाव देखकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित होता गया।

दौड़ उपन्यास में चित्रित समस्याएँ :

'दौड़' सामाजिक समस्या प्रधान एक लघु उपन्यास है। उपन्यास में जिस विषय का निर्देश किया गया है वह हमारे समाज से जुड़ा हुआ है। आधुनिकता की चकाचौंध में आज की युवा पीढ़ी के मन तरक्की ही जीवन मानते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ममता जी ने अपने उपन्यास में विभिन्न समस्याओँ की ओर दृष्टिपात किया है – जो निम्नानुसार है।

पुरानी और नयी पीढ़ी के संघर्ष की समस्याँ :

दौड़ उपन्यास में प्रमुख समस्या संघर्ष की समस्या है जो लेखिका ममता जी ने उपन्यास के पात्र रेखा और राकेश तथा पवन और सघन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जो इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है। रेखा और राकेश के ये दोनों बेटे हैं। पवन और सघन नई उम्र के ये लड़के केवल इस उपन्यास के ही नहीं बल्कि समकालीन समय के अधुनातन चरित्र हैं। ये वे प्रतीक चरित्र हैं जो महानगरों में दौड़ भाग करते हैं जैसे कि – "यह ठीक है कि पवन घर से अठारह सौ किलोमीटर दूर आ गया है। पर एम.बी.ए. के बाद कहीं न कहीं उसे जाना ही था उसके माता-पिता अवश्य चाहते थे कि वह वहीं उनके पास रहकर नौकरी करे पर उसने कहाँ, यहाँ मेरे लायक सर्विस कहाँ? यह तो

बेरोजगारों का शहर है। ज्यादा से ज्यादा नूरानी तेल की मार्केटिंग मिल जाएगी। माँ बाप समझ गये थे कि उनका शिरखरचुम्बी बेटा कहीं और बसेगा।" पवन और सघन क्मशः एम.बी.ए और कम्प्यूटर हार्डवेयर कोर्स करके लाहाबाद रहना नहीं चाहते थे। पवन अहमदाबाद, राजकोट, मद्रास मैल कम्पनी में चला जाता है। माता-पिता ने उसे रोकने का बहुत प्रयत्न किया पर वह नहीं माना। बाप-बेटों में विचारों में भी बहुत मतभेद हैं। माँ के प्रति पवन का व्यवहार बड़ा ही शुष्क है। पिताजी को पुरानी चीजें श्रेष्ठ लगती थीं। जबकि पवन का आकर्षण केवल आधुनिक चीजों पर था।

अकेलेपन की समस्याएँ :

अकेलेपन की समस्या के केन्द्र में राकेश-रेखा हैं। दोनों बेटों के चले जाने के बाद घर में अकेले हो जाते हैं। "बच्चों के जाने के बाद घर एकबारगी भाय भांय करने लगा। अकेलेपन के साथ सबसे जानलेवा होते हैं उदासी और पराजय बोध। वे दोनों सुबह की सैर पर जाते। न्यूयार्क चला गया था। मजीठिया का छोटा भाई कैनेडा में हार्डवेयर का कोर्स करने गया था। वहीं बस गया। ये सब कामयाब संतानों के माता-पिता थे। साथ ही यह भी कहा कहा कि किसी को बोटा बनाकर पिता जी का दाह संस्कार करवाइए।" इसी प्रकार अपने पराये हो गये हैं। बुजुर्ग माता-पिता एक-एक पैसा जमा कर बच्चों की परवरिश करते हैं। अंत में उन्हें अकेले ही में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

ढोंगी स्वामियों की समस्याएँ :

ढोंगी स्वामी की समस्या के केंद्र में पवन है। राजकोट से तेरह मील की दूरी पर सरल मार्ग केम्प था। कृष्णा स्वामी से पवन बहुत प्रभावित हो जाता है। सरल मार्ग के सिद्धांत-चिंतन, मनन और आत्म-शुद्धि उस पर प्रभाव छोड़ जाते हैं। राकेश को ऐसे स्वामियों पर भरोसा नहीं था। पवन स्वामी जी की सराहना करते हुए कहता है – "अब धर्म, दर्शन और अध्यात्म जीवन में हर समय रिसने वाले फोड़े नहीं है। आप सरल मार्ग के शिविर में कभी जा कर देखिए। चार-पाँच दिन का कोर्स होता है।" आजकल के धर्मगुरु पर प्रहार करते हुए पिताजी ने कहा – "भक्ति की कैपस्यूल बनाकर बेचते हैंआजकल के धर्मगुरु। सुबह टी.वी. के सभी चैनलों पर एक न एक गुरु प्रवचन देता रहता है। पर उनमें वह बात कहाँ जो शंकराचार्य में थी या स्वामी विवेकानंद में। स्वामी जी का कहना ता कि धर्म जहां खत्म होता है, अध्यात्म वहीं शुरू होता है।" उसका कहना था खि सरल मार्ग में एकदम सीधी सच्ची यथार्थवादी बातें हैं।

शिक्षा में भष्टाचार की समस्याएँ :

आधुनिक शिक्षा अत्यंत महँगी होती जा रही हैं। दूसरी ओर आधुनिक युगीन युवा पीढ़ी ऐसी शिक्षा के पीछे दौड़ रहे हैं। जिसमें वेतन अधिक हो। आज के युवक-युवतियों को एम.बी.ए. में प्रवेश की लालसा तीव्र होती जा रही डै। बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक के तीन जादुई अक्षरों ने बहुत से नौजवानो के जीवन और सोच की दिशा ही बदल डाली है। ये तीन अक्षर थे एम.बी.ए. नौकरियों में आरक्षण की आँधी से सवर्ण परिवार

धड़ाधड़ अपने बेटे-बेटियों को एम.बी.ए में दाखिल होने की सलाह दे रहे थे। जो बच्चा पवन, शिल्पा, काबरा और रोजविन्दर कौर की तरह कैट, मैट जैसी परीक्षाएँ निकल ले वह तो ठीक, जो न निकाल पाये उसके लिए लब्मी चौड़ीस कैपिटेशन फीस देने पर एम.एम. एस. के द्वार खुले थे।

पवन का सहपाठी शरद जैन था। उसके पिता इलाहाबाद में नामी चिकित्सक थे। शरद को एम.बी.बी. एस. में दाखिल करवाने की उनकी कोशिशें नाकामयाब रहती है। बाद में वे बेटे को एम.बी.ए. के लिए भेज देते हैं।

निष्कर्ष :

इस प्रकार शिक्षा में भष्टाचार पहले भी था और आज भी है। आज शिक्षण व्यापार बन गया है। एम.बी.ए., एम.एम.एस., तथा एम.बी.बी.एस. की शिक्षा के जरिये लेखिका ने शिक्षा में फैले भ्रष्टाचार का उल्लेख किया है। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त करने में जितना रुपया खर्च करना पड़ता है, इससे कई गुना अधिक बच्चों को नौकरियों में लगाने के लिए खर्च करना पड़ता है।

संदर्भ :

1. ममता कालिया, दौड़, वाणी प्रकाशन, 2014, पृ. 12
2. वही, पृ 25
3. वही, पृ. 56